

भारत की समुद्री भूमिका में बाधाएँ

प्रलमिस के लिये:

क्वाड, समुद्री कार्यक्षेत्र जागरूकता पहल (MDA), हृदि-प्रशांत क्षेत्र, आईएफ-आईओआर।

मेन्स के लिये:

क्वाड ग्रुप, हृदि-प्रशांत क्षेत्र पहल, मुद्दे और चुनौतियाँ।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका से मलिकर बने **क्वाड समूह** ने सूचना साझा करने तथा समुद्री नगिरानी के लिये एक **हृदि-प्रशांत समुद्री कार्यक्षेत्र जागरूकता (IPMDA) पहल** शुरू की है।

- बुनियादी ढाँचे की कमी और भारत में संपर्क अधिकारियों की नयुक्ति में नरितर देरी ने भारत की भूमिका को सीमति कर दिया है।

हृदि-प्रशांत समुद्री कार्यक्षेत्र जागरूकता (IPMDA) पहल:

- टोक्यो में वर्ष 2022 में आयोजति क्वाड नेताओं के सम्मलेन में **IPMDA पहल की घोषणा** की गई थी ताकि हृदि-प्रशांत, प्रशांत द्वीप समूह, दक्षिण-पूर्व एशिया और हृदि महासागर क्षेत्र (IOR) में **"डारक शपिगि"** की नगिरानी की जा सके और तीन महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को एकीकृत करते हुए **"साझादारां द्वारा समुद्र में नकिट-वास्तविक समय की गतिविधियों की तेज़, व्यापक और अधिक सटीक समुद्री तकनीक "** का निर्माण किया जा सके।
 - डारक शपि वे जहाज़ होते हैं जिनकी स्वचालति पहचान प्रणाली (ASI) के ट्रांसपॉन्डर को बंद कर दिया जाता है ताकि उनका पता न चल सके।
- यह अन्य सामरिक-स्तरीय गतिविधियों पर नज़र रखने की भी अनुमति देगा, जैसे कि समुद्र में संकेत-स्थान, जलवायु और मानवीय घटनाओं पर प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिये भागीदारों की क्षमता में सुधार करेगा, साथ ही उनकी मत्स्य पालन गतिविधियों की रक्षा करेगा, जो कि इंडो-पैसिफिक अर्थव्यवस्थाओं के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
- IPMDA पूरे क्षेत्र में चीनी नौसैनिक उपस्थिति के वसितार की पृष्ठभूमि में **क्वाड देशों के साथ-साथ तटवर्ती राज्यों की मदद करेगा।**
- इससे देश में विभिन्न एजेंसियों के साथ संबंध स्थापति करने में **भारतीय संपर्क अधिकारियों की मौजूदा भूमिका में और वृद्धि होगी।**

वे दो मुद्दे जो भारत की भूमिका को सीमति करते हैं:

- **बुनियादी ढाँचे की कमी:** इसमें न केवल जहाज़ निर्माण और जहाज़ की मरम्मत शामिल है, बल्कि भारत के तटीय एवं आंतरिक क्षेत्रों के एकीकृत विकास के लिये रेल और सड़क नेटवर्क के माध्यम से आधुनिकीकरण एवं आंतरिक संपर्क भी शामिल है।
 - इसमें तटीय नौवहन भी शामिल है। बुनियादी ढाँचे की कमी के कारण भारत **भारतीय नौसेना के सूचना संलयन केंद्र-हृदि महासागर क्षेत्र (IFC-IOR) में अंतरराष्ट्रीय संपर्क अधिकारी (ILO)** की पोस्टिंग स्वीकार करने में असमर्थ है।
 - भारत ने 22 देशों और एक बहुराष्ट्रीय समूह के साथ **व्हाइट शपिगि एकसचेंज समझौता** पर हस्ताक्षर किये हैं।
 - व्हाइट शपिगि जानकारी वाणज्यिकि गैर-सैन्य व्यापारी जहाज़ों की पहचान और आवाजाही पर प्रासंगिकि अग्रमि सूचनाओं के आदान-प्रदान को संदर्भति करती है।
 - जहाज़ों को सफेद (वाणज्यिकि जहाज़ों), ग्रे (सैन्य जहाज़ों), और काले (अवैध जहाज़ों) में वर्गीकृत किया जाता है।
 - न केवल भारत में ILO का होना महत्त्वपूर्ण है, बल्कि अन्य देशों में समान केंद्रों पर भारतीय नौसेना के अधिकारियों को तैनात करना भी आवश्यक है।
- **क्षेत्र में अन्य सुविधाओं और केंद्रों पर भारतीय संपर्क अधिकारियों की तैनाती में लगातार देरी:**
 - क्षेत्रीय समुद्री सूचना संलयन केंद्र (RMIFC), मेडागास्कर और क्षेत्रीय समन्वय संचालन केंद्र, सेशेलस में भारतीय नौसेना संपर्क अधिकारियों (LO) को तैनात करने का प्रस्ताव दो वर्ष से अधिक समय से लंबति है।

- अबू धाबी में [सट्रेट ऑफ होरमुज](#) (EMASOH) में यूरोपीय नेतृत्व वाले मशिन में संपर्क अधिकारी को तैनात करने के एक अन्य प्रस्ताव को भी अब तक मंजूरी नहीं मिली है।
- एलओ की तैनाती में भी देरी हो रही है। उदाहरण के लिये, भारत का सगिापुर में भारतीय LOकी नियुक्ति 2009 में की गई थी।

सूचना संलयन केंद्र - हृदय महासागर क्षेत्र (IFC-IOR):

- भारतीय नौसेना ने दिसंबर 2018 में गुगुराम में सामुद्रिक नौवहन की नगिरानी के लिये 'सूचना प्रबंधन और विश्लेषण केंद्र' (Information Management and Analysis Centre- IMAC) के रूप में 'हृदय महासागर क्षेत्र के लिये सूचना संलयन केंद्र' की स्थापना की है।
- IFC-IOR की परकिल्पना विश्व व्यापार और सुरक्षा के संबंध में क्षेत्र के महत्त्व को देखते हुए समुद्री सुरक्षा के लिये सहयोग को बढ़ावा देने हेतु की गई थी।
- अपनी स्थापना के बाद से केंद्र ने 50 से अधिक देशों और बहुराष्ट्रीय/समुद्री सुरक्षा केंद्रों के साथ कार्य स्तर के संबंध स्थापित किये हैं।

आगे की राह

- IPMDA को प्रोत्साहन प्रदान कर अन्य IFC के साथ संबंधों में सुधार लाने और लंबित प्रस्तावों को शीघ्रता से संबोधित करने की आवश्यकता है अन्यथा भारत इस अवसर को खो देगा।
- यदातुरंत कार्रवाई नहीं की गई तो यह पहल उत्साह खो देगी क्योंकि देशों की दिलचस्पी खत्म हो जाएगी।
- देश के आर्थिक विकास और वृद्धि के लिये भारतीय बुनियादी ढाँचे का विकास आवश्यक है। जैसा कि भारत ने विकास आधारित आर्थिक नीतिको अपनाया है, भारत को समुद्री बुनियादी ढाँचे को विकसित करने की ज़रूरत है, जैसे- बंदरगाहों का विकास, कनेक्टिविटी, रसद आदी।

वर्षों के प्रश्न:

प्रश्न. समाचारों में देखे जाने वाले शब्द 'डजिटल सगिल मार्केट स्ट्रैटेजी' पद कसिे नरिदषिट करता है? (2017)

- आसयिन
- बर्किस'
- यूरोपयिन यूनयिन
- जी-20

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- यूरोपीय संघ द्वारा 6 मई, 2015 को 'डजिटल सगिल मार्केट स्ट्रैटेजी' को अपनाया गया था। इसमें 16 वशिषिट पहल शामिल हैं जिनका उद्देश्य लोगों और व्यापार के लिये डजिटल अवसरों को खोलना तथा डजिटल अर्थव्यवस्था में विश्व नेता के रूप में यूरोप की स्थितिको बढ़ाना है।
- यह रणनीति तीन नीतगित स्तंभों पर आधारित है:
- **पहुँच:** उपभोक्ताओं और व्यवसायों के लिये पूरे यूरोप में डजिटल वस्तुओं एवं सेवाओं तक बेहतर पहुँच।
- **पर्यावरण:** डजिटल नेटवर्क और नवोन्मेषी सेवाओं के फलने-फूलने के लिये सही परस्थितियों व समान अवसर प्रदान करना।
- **अर्थव्यवस्था और समाज:** डजिटल अर्थव्यवस्था की विकास क्षमता को अधिकितम करना। **अतः विकल्प (c) सही है।**

स्रोत: द हट्टू